शुगर मिलों का आरोप, चीनी के दाम घटाने का चल रहा खेल

एक महीने के भीतर चीनी की कीमत में तकरीबन 13 पर्सेंट की गिरावट आई है

[जयश्री भोसले | पुणे]

महाराष्ट्र में बड़ी शुगर मिलों ने आरोप लगाया है कि कुछ ट्रेडर्स और ट्रेडिंग कंपनियां 'सांठगांठ कर' चीनी की कीमतें कम कर रही हैं। एक महीने के भीतर चीनी की कीमत में तकरीबन 13 पर्सेंट की गिरावट आई है।

महाराष्ट्र के पूर्व सहकारिता मंत्री और शुगर मिल मालिक हर्षवर्धन पाटिल ने बताया, '10 नवंबर को चीनी की कीमत 36.50 रुपये प्रति किलो थी, जो अब घटकर 31.50 रुपये किलो हो गई है। इसमें कुछ ट्रेडर्स और कुछ कंपनियों का खेल है।'

पाटिल का कहना था कि शुगर के प्रॉडक्शन में बड़ा उछाल नहीं आने वाला है। उन्होंने कहा, 'शुगर प्रॉडक्शन इतना ज्यादा नहीं रहने वाला है कि कीमतों में इतनी तेज गिरावट हो सके। यह दुर्लभ मामला है। सरकार को यह पता लगाना चाहिए कि ऐसा क्यों हो रहा है।' महाराष्ट्र की शुगर मिलों का दावा है कि सेल्स काफी सुस्त हो गई है, जिससे गन्ना किसानों के लिए पेमेंट करना मुश्किल हो गया है।

गन्ना पेराई के शुरुआती सीजन से मिलों में चीनी की कीमत 36 रुपये किलो थी, जो अब गिरकर 32 रुपये किलो हो गई है। कुछ जगहों पर तो इससे भी कम कीमत है। शुगर ट्रेड को कीमतों में और गिरावट का अनुमान है। बॉम्बे शुगर मर्चेंट्स एसोसिएशन के प्रेसिडेंट अशोक जैन ने बताया, 'शुगर डिमांड अब भी सुस्त है, जिससे कीमतों में नरमी है। इस महीने शुगर की कीमत में 1 रुपये प्रति किलो और गिरावट के आसार हैं।'

> महाराष्ट्र की शुगर मिलों का दावा है कि सेल्स काफी सुस्त हो गई है, जिससे गन्ना किसानों के लिए पेमेंट करना मुश्किल हो गया है

महाराष्ट्र स्टेट कोऑपरेटिव शुगर मिल्स फेडरेशन के मैनेजिंग डायरेक्टर संजय खटल ने बताया, '31 दिसंबर 2017 तक शुगर ट्रेडर्स के लिए स्टॉक लिमिट है। इसके कारण वे ज्यादा शुगर नहीं उठा रहे हैं, जिससे इसकी कीमतों में सुस्ती है। हालांकि, शुगर मिलें स्टॉक को लंबे समय तक नहीं रख सकती हैं, क्योंकि उन्हें गन्ने का भुगतान भी करना है।' शुगर की कीमतों में गिरावट के कारण महाराष्ट्र स्टेट कोऑपरेटिव बैंक ने भी इसकी कीमतों का रिवीजन कर इसमें कमी की है। यह बैंक राज्य की शुगर मिलों का मुख्य लेंडर है।

खटल ने बताया, 'इससे शुगर मिलों की समस्याएं बढ़ गई हैं और पेराई सीजन पूरी रफ्तार में होने के बावजूद उनके पास किसानों का भुगतान करने के लिए पैसा नहीं है।'

हालांकि, इंडस्ट्री के एक हिस्से का आरोप है कि कुछ ट्रेडर्स ने 'खेल कर' कीमतों को घटाया है। बाकी का कहना है कि सर्दियों का सीजन शुरू होने के कारण इसकी मांग में सुस्ती सामान्य बात है।

जैन ने बताया, 'जनवरी में मांग और कीमतों में कुछ सुधार हो सकता है, क्योंकि शुगर ट्रेड को प्रॉडक्शन के बारे में कुछ आइडिया मिल सकेगा।' संक्रांति त्योहार के कारण भी मांग भी तेज हो सकती है।

शुगर मिलों को सस्ते इंपोर्ट की भी चिंता सता रही है। खटल ने बताया, 'यूरोपीय यूनियन ने अपनी मिलों के शुगर प्रॉडक्शन पर कोटा संबंधी पाबंदी को खत्म कर दिया था। वे अब अपना सरप्लस शुगर बेचने के लिए नए मार्केट की तलाश करेंगे।'